ISSN 2277-2685
IJESR/April-June. 2025/ Vol-13/Issue-2/192-203
Rajeshwari S N *et. al.*, / International Journal of Engineering & Science Research

बिहार में शैक्षणिक उत्कृष्टता पर छात्र-शिक्षक संबंधों का प्रभाव: एक व्यापक समीक्षा

धर्मेन्द्र कुमार[1], डॉ. बाबूराम मौर्य[2]
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, साईं नाथ विश्वविद्यालय[1]
प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, साईं नाथ विश्वविद्यालय[2]

सार

यह समीक्षा पत्र छात्र-शिक्षक संबंधों पर मौजूदा साहित्य और बिहार, भारत में शैक्षणिक उत्कृष्टता पर उनके प्रभाव की जांच करता है। कम साक्षरता दर और उच्च ड्रॉपआउट दर सहित राज्य की ऐतिहासिक शैक्षिक चुनौतियों के बावजूद, शैक्षिक परिणामों में शिक्षक-छात्र गतिशीलता की महत्वपूर्ण भूमिका की मान्यता बढ़ रही है। उपलब्ध शोध के व्यवस्थित विश्लेषण के माध्यम से, यह पेपर संचार पैटर्न, शिक्षक सहायता तंत्र और बिहार के शैक्षिक परिदृश्य के लिए विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों सहित प्रमुख विषयों की पहचान करता है। निष्कर्ष सकारात्मक छात्र-शिक्षक संबंधों और बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच महत्वपूर्ण सहसंबंधों को प्रकट करते हैं, विशेष रूप से संसाधन-बाधित वातावरण में। हालाँकि, यह समीक्षा पर्याप्त शोध अंतरालों को भी उजागर करती है, विशेष रूप से बिहार की ग्रामीण शैक्षिक सेटिंग्स के लिए विशिष्ट अनुभवजन्य अध्ययनों के संबंध में। यह पेपर बिहार में शिक्षा के इस महत्वपूर्ण आयाम की समझ को मजबूत करने के लिए शैक्षिक अभ्यास और भविष्य के अनुसंधान निर्देशों की सिफारिशों के साथ समाप्त होता है।

1 परिचय

बिहार, ऐतिहासिक रूप से भारत के सबसे शैक्षिक रूप से चुनौतीपूर्ण राज्यों में से एक, ने पिछले दो दशकों में अपने शैक्षिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे हैं। सर्व शिक्षा अभियान और शिक्षा का अधिकार अधिनियम जैसी पहलों के बाद नामांकन दरों में उल्लेखनीय सुधार के बावजूद, राज्य शैक्षिक गुणवत्ता और छात्र प्रतिधारण के मुद्दों से जूझ रहा है। बिहार में साक्षरता दर (2011 की जनगणना के अनुसार 63.82%) राष्ट्रीय औसत 74.04% से नीचे बनी हुई है, जो शैक्षिक परिणामों में लगातार चुनौतियों को उजागर करती है। इस संदर्भ में, छात्र-शिक्षक संबंध अकादमिक उत्कृष्टता को संभावित रूप से प्रभावित करने वाले एक महत्वपूर्ण लेकिन समझे गए कारक के रूप में उभरे हैं। विश्व स्तर पर शैक्षिक अनुसंधान ने सकारात्मक छात्र-शिक्षक संबंधों और अनुकूल शैक्षणिक परिणामों के बीच मजबूत संबंध स्थापित किया है। हालाँकि, बिहार के अद्वितीय सामाजिक-शैक्षिक संदर्भ में इन निष्कर्षों की प्रयोज्यता के लिए सावधानीपूर्वक जांच की आवश्यकता है। बिहार की शैक्षिक प्रणाली विशिष्ट सांस्कृतिक, आर्थिक और बुनियादी ढांचे की बाधाओं के भीतर संचालित होती है जो कक्षा की गतिशीलता को अधिक

विकसित क्षेत्रों या पश्चिमी शैक्षिक प्रणालियों में देखे गए लोगों से अलग आकार देती है जहां मौजूदा शोध का अधिकांश भाग आयोजित किया गया है।

यह समीक्षा मूल प्रश्न को संबोधित करने का प्रयास करती है: "बिहार में शैक्षणिक उत्कृष्टता पर छात्र-शिक्षक संबंधों के प्रभावों के संबंध में ज्ञान का मौजूदा भंडार क्या है?" उपलब्ध साहित्य को संश्लेषित करके, उभरते विषयों की पहचान करके और शोध अंतरालों को उजागर करके, इस पेपर का उद्देश्य बिहार के स्कूलों में छात्र-शिक्षक गतिशीलता सीखने के परिणामों को कैसे प्रभावित करती है, इसकी व्यापक समझ प्रदान करना है। इसका उद्देश्य केवल मौजूदा शोध को सूचीबद्ध करना नहीं है, बल्कि बिहार के विशिष्ट शैक्षिक संदर्भ में इसका आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। इस समीक्षा का दायरा मुख्य रूप से पिछले पंद्रह वर्षों (2008-2023) के भीतर किए गए शोध को शामिल करता है, जो बिहार में प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक औपचारिक शिक्षा सेटिंग्स पर केंद्रित है। इस समीक्षा की एक सीमा बिहार-विशिष्ट अनुभवजन्य अध्ययनों की सापेक्ष कमी है, जिसके कारण भारत के भीतर तुलनीय सामाजिक-आर्थिक संदर्भों में किए गए शोध से कुछ एक्सट्रपलेशन की आवश्यकता होती है।

2. सैद्धांतिक रूपरेखा

छात्र-शिक्षक संबंधों का कोई भी सार्थक विश्लेषण प्रासंगिक सैद्धांतिक ढांचे पर आधारित होना चाहिए जो उन तंत्रों को समझाने में मदद करता है जिनके माध्यम से ये रिश्ते सीखने को प्रभावित करते हैं। कई सैद्धांतिक दृष्टिकोण इन गतिशीलता में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, हालांकि बिहार के शैक्षिक संदर्भ में उनके अनुप्रयोग के लिए सांस्कृतिक प्रासंगिकता पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। अटैचमेंट थ्योरी, बॉल्बी द्वारा अग्रणी और बाद में रॉबर्ट पिएंटा जैसे शोधकर्ताओं द्वारा शैक्षिक सेटिंग्स में लागू किया गया, सुझाव देता है कि शिक्षकों के साथ सुरक्षित लगाव संबंध छात्रों को अन्वेषण और सीखने के लिए आवश्यक भावनात्मक सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं। बिहार के संदर्भ में, जहां पारंपरिक प्राधिकरण संरचनाएं अक्सर कक्षा की बातचीत को परिभाषित करती हैं, पश्चिमी लगाव प्रतिमानों की प्रयोज्यता के लिए सूक्ष्म व्याख्या की आवश्यकता होती है। शर्मा और कुमार (2019) के शोध से पता चलता है कि बिहार के छात्र शिक्षकों के प्रति सुरक्षित लगाव की अलग तरह से अवधारणा कर सकते हैं, भावनात्मक निकटता पर सम्मान और मार्गदर्शन पर जोर देते हैं जैसा कि पश्चिमी ढांचे में समझा जाता है।

सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत, विशेष रूप से बंडुरा की मॉडलिंग और पारस्परिक नियतिवाद की अवधारणाएं, एक और लेंस प्रदान करती हैं जिसके माध्यम से छात्र-शिक्षक गतिशीलता को समझा जा सकता है। शिक्षक महत्वपूर्ण मॉडल के रूप में कार्य करते हैं जिनके व्यवहार, दृष्टिकोण और सीखने के दृष्टिकोण को छात्रों द्वारा देखा और संभावित रूप से आत्मसात किया जाता है। बिहार की शैक्षिक संस्कृति में, जहां शिक्षक पारंपरिक रूप से उच्च सम्मान और प्राधिकार के पद पर हैं, उनका

मॉडलिंग प्रभाव विशेष रूप से स्पष्ट हो सकता है। मिश्रा (2018) के अध्ययन से संकेत मिलता है कि शिक्षक मॉडलिंग का बिहार की कक्षाओं में छात्रों की शैक्षणिक आत्म-प्रभावकारिता मान्यताओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ब्रोंफेनब्रेनर का पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत बिहार में छात्र-शिक्षक संबंधों को समझने के लिए शायद सबसे व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है, जो उन अंतर्निहित संदर्भों को स्वीकार करता है जिनमें ये रिश्ते विकसित होते हैं। सिद्धांत मानता है कि माइक्रोसिस्टम (कक्षा) के भीतर बातचीत व्यापक एक्सोसिस्टम (शैक्षिक नीतियां, शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली) और मैक्रोसिस्टम (सांस्कृतिक मूल्य, आर्थिक स्थिति) से प्रभावित होती है। यह परिप्रेक्ष्य बिहार में विशेष रूप से मूल्यवान है, जहां सामाजिक आर्थिक असमानताएं, जातिगत गतिशीलता और ग्रामीण-शहरी विभाजन शैक्षिक अनुभवों को महत्वपूर्ण रूप से आकार देते हैं। सिंह और प्रसाद (2020) का शोध दर्शाता है कि कैसे बिहार के लिए अद्वितीय पारिस्थितिक कारक, जैसे कि कृषि चक्र और मौसमी प्रवासन, स्कूल में उपस्थिति पैटर्न को प्रभावित करते हैं और परिणामस्वरूप, छात्र-शिक्षक संबंधों के विकास को प्रभावित करते हैं।

बिहार के संदर्भ में इन सिद्धांतों की सांस्कृतिक प्रासंगिकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। पश्चिमी सैद्धांतिक ढाँचे अक्सर व्यक्तिवादी मूल्यों, क्षैतिज शक्ति संबंधों और भावनात्मक अभिव्यक्ति पर जोर देते हैं जो बिहार की अधिक सामूहिकतावादी, पदानुक्रमित और भावनात्मक रूप से आरक्षित शैक्षिक संस्कृति के साथ संरेखित नहीं हो सकते हैं। कुमारी (2021) जैसे शैक्षिक मानवविज्ञानियों के हालिया काम ने सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी सैद्धांतिक ढांचे को विकसित करना शुरू कर दिया है जो बिहार की कक्षाओं की अनूठी गतिशीलता को बेहतर ढंग से पकड़ता है, जिसमें समकालीन शैक्षिक सिद्धांत के साथ-साथ पारंपरिक भारतीय शैक्षणिक दर्शन की अवधारणाओं को शामिल किया गया है।

3। प्रक्रिया

इस समीक्षा में बिहार के शैक्षिक संदर्भ में छात्र-शिक्षक संबंधों पर प्रासंगिक साहित्य की पहचान, चयन और संश्लेषण के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाया गया। उच्च-गुणवत्ता, प्रासंगिक स्रोतों पर ध्यान बनाए रखते हुए व्यापक कवरेज सुनिश्चित करने के लिए कार्यप्रणाली को डिज़ाइन किया गया था। साहित्य खोज रणनीति में ईआरआईसी, गूगल स्कॉलर, शोधगंगा (एक भारतीय थीसिस भंडार) और नेशनल रिपोजिटरी ऑफ ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (एनआरओईआर) जैसे विशेष शिक्षा डेटाबेस सहित कई डेटाबेस का उपयोग किया गया। नियोजित कीवर्ड में "छात्र-शिक्षक संबंध," "शिक्षक-छात्र संपर्क," "शैक्षणिक उपलब्धि," "शैक्षणिक उत्कृष्टता," "बिहार शिक्षा," "कक्षा गतिशीलता," और "बिहार में शैक्षिक परिणाम" जैसे शब्दों का संयोजन शामिल था। क्षेत्रीय शैक्षणिक पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रासंगिक शोध को पकड़ने के लिए अंग्रेजी और हिंदी दोनों में खोज की गई। इसके अतिरिक्त, प्रासंगिक पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए सरकारी रिपोर्टों, नीति दस्तावेजों और बिहार में सक्रिय शैक्षिक गैर सरकारी संगठनों के प्रकाशनों की समीक्षा की गई।

चयन मानदंड में 2008 से 2023 तक बिहार में किए गए सहकर्मी-समीक्षित अनुभवजन्य अध्ययनों को प्राथमिकता दी गई। हालांकि, बिहार में छात्र-शिक्षक संबंधों को विशेष रूप से संबोधित करने वाले सीमित शोध को देखते हुए, निष्कर्षों की हस्तांतरणीयता पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने के साथ, भारत के भीतर समान सामाजिक-आर्थिक संदर्भों से अध्ययनों को शामिल करने के लिए चयन का विस्तार किया गया था। सैद्धांतिक पेपर शामिल किए गए थे यदि वे विशेष रूप से भारतीय शैक्षिक संदर्भ के लिए प्रासंगिक वैचारिक ढांचे की पेशकश करते थे। अंतिम चयन में 47 मुख्य प्रकाशन शामिल थे, जिनमें बिहार में पूर्ण या आंशिक रूप से किए गए 23 अनुभवजन्य अध्ययन, तुलनीय भारतीय राज्यों से 14 अध्ययन, 6 सैद्धांतिक पेपर और 4 व्यापक सरकारी या एनजीओ रिपोर्ट शामिल थे। डेटा निष्कर्षण ने एक संरचित प्रोटोकॉल का पालन किया जिसमें प्रत्येक अध्ययन की प्रमुख पद्धतिगत विशेषताओं, नमूना विशेषताओं, प्रमुख निष्कर्षों और सीमाओं का दस्तावेजीकरण किया गया। इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया कि प्रत्येक अध्ययन कैसे संचालित होता है और छात्र-शिक्षक संबंधों और शैक्षणिक परिणामों दोनों को मापा जाता है। संश्लेषण प्रक्रिया ने विषयगत विश्लेषण दृष्टिकोण को नियोजित किया, अध्ययन में आवर्ती पैटर्न और विषयों की पहचान की, जबकि पद्धतिगत विविधताओं के बारे में जागरूकता बनाए रखी जो निष्कर्षों की तुलनीयता को प्रभावित कर सकती हैं।

चयनित अध्ययनों के आलोचनात्मक विश्लेषण से इस शोध क्षेत्र में आम तौर पर कई पद्धति संबंधी सीमाएं सामने आईं। कई अध्ययन क्रॉस-सेक्शनल डिज़ाइनों पर बहुत अधिक निर्भर थे, जो शिक्षक-छात्र गतिशीलता और शैक्षणिक परिणामों के बीच संबंधों के बारे में कारणात्मक अनुमानों को सीमित करते थे। नमूना आकार अक्सर मामूली थे, और ग्रामीण स्कूलों - जो बिहार के शैक्षिक परिदृश्य का अधिकांश हिस्सा हैं - को शोध में कम प्रतिनिधित्व दिया गया था। इसके अतिरिक्त, माप के दृष्टिकोण काफी भिन्न हैं, कुछ अध्ययनों में मान्य उपकरणों का उपयोग किया गया है, जबकि अन्य ने सीमित साइकोमेट्रिक दस्तावेज़ीकरण के साथ शोधकर्ता-विकसित उपायों को नियोजित किया है। निष्कर्षों की व्याख्या और संश्लेषण करते समय इन सीमाओं पर सावधानीपूर्वक विचार किया गया।

4. निष्कर्ष और विश्लेषण

बिहार में छात्र-शिक्षक संबंधों पर साहित्य की समीक्षा से कई प्रमुख विषयों का पता चलता है जो इस शोध क्षेत्र की विशेषता रखते हैं। ये विषय कक्षा में बातचीत की बहुमुखी प्रकृति और बिहार के विशिष्ट शैक्षणिक संदर्भ में शैक्षणिक परिणामों के साथ उनके जटिल संबंध को दर्शाते हैं।

संचार और विश्वास

अनुसंधान लगातार बिहार में प्रभावी छात्र-शिक्षक संबंधों के मूलभूत तत्वों के रूप में संचार पैटर्न और विश्वास की पहचान करता है। पांडे (2017) और झा (2019) के अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों और छात्रों के बीच खुले संचार चैनल उच्च छात्र

जुड़ाव और बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन से महत्वपूर्ण रूप से जुड़े हुए थे। विशेष रूप से उल्लेखनीय है पांडे का बिहार भर के 15 उच्च प्रदर्शन वाले स्कूलों का मिश्रित-तरीकों का अध्ययन, जिसमें पता चला कि जिन शिक्षकों ने छात्रों की आवाज़ के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए स्पष्ट संचार प्रोटोकॉल स्थापित किए, उन्होंने सीखने के लिए अनुकूल कक्षा वातावरण बनाया। हालाँकि, शिक्षकों के अधिकार और सम्मान से संबंधित सांस्कृतिक मानदंड कभी-कभी इस संचार को बाधित करते हैं। कुमार के (2020) ग्रामीण बिहार के स्कूलों में नृवंशविज्ञान अनुसंधान ने दस्तावेज किया कि कैसे पारंपरिक पदानुक्रमित संरचनाएं संचार बाधाएं पैदा कर सकती हैं, जिससे छात्र प्रश्न पूछने या भ्रम व्यक्त करने में झिझकते हैं। कई अध्ययनों में विश्वास एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में उभरा। पूरे बिहार में 1,200 माध्यमिक छात्रों के बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण में, सिंह (2018) ने पाया कि शिक्षकों की क्षमता और निष्पक्षता में छात्रों का भरोसा अकादमिक जुड़ाव का सबसे मजबूत भविष्यवक्ता था, जो छात्र भागीदारी और होमवर्क पूरा करने में 27% भिन्नता के लिए जिम्मेदार था। यह विश्वास आयाम विशेष रूप से बिहार के सामाजिक रूप से स्तरीकृत संदर्भ में महत्वपूर्ण प्रतीत होता है, जहां शिक्षकों का जाति और सामाजिक-आर्थिक विभाजनों के पार छात्रों के साथ न्यायसंगत व्यवहार कक्षा की गतिशीलता और सीखने के परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है (कुमारी, 2021)।

शिक्षक समर्थन और प्रेरणा

साहित्य लगातार बिहार में शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों के रूप में शिक्षक समर्थन और प्रेरक रणनीतियों पर प्रकाश डालता है। महरोता (2017) के तीन शैक्षणिक वर्षों में 450 मिडिल स्कूल के छात्रों पर नज़र रखने वाले अनुदैर्ध्य अध्ययन में पाया गया कि शिक्षक प्रेरक प्रथाओं - जिसमें प्रयास, रचनात्मक प्रतिक्रिया और उच्च उम्मीदों की पहचान शामिल है - पूर्व उपलब्धि और सामाजिक आर्थिक स्थिति को नियंत्रित करते हुए भी शैक्षणिक सुधार की भविष्यवाणी करती है। विशेष रूप से प्रभावी वे शिक्षक थे जिन्होंने छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च शैक्षणिक अपेक्षाओं को व्यावहारिक समर्थन रणनीतियों के साथ जोड़ा। बिहार में बड़े वर्ग के आकार और सीमित संसाधनों के संदर्भ में व्यक्तिगत ध्यान विशेष रूप से महत्वपूर्ण बनकर उभरता है। रंजन और सिंह (2019) के 32 कक्षाओं के तुलनात्मक विश्लेषण ने उन सेटिंग्स में काफी अधिक उपलब्धि हासिल की, जहां शिक्षकों ने सभी अध्ययनित कक्षाओं में समान संसाधन बाधाओं के बावजूद, व्यक्तिगत प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण लागू किया। हालाँकि, इस तरह का ध्यान देने की व्यवहार्यता चुनौतीपूर्ण बनी हुई है, कई अध्ययनों से पता चला है कि बिहार में शिक्षक कार्यभार और कक्षा का आकार (अक्सर प्रति शिक्षक 60 छात्रों से अधिक) व्यक्तिगत समर्थन के लिए संरचनात्मक बाधाएँ पैदा करते हैं (गुप्ता, 2021)।

सांस्कृतिक और सामाजिक आर्थिक कारक

साहित्य से पता चलता है कि कैसे सांस्कृतिक मानदंड और सामाजिक आर्थिक कारक बिहार में छात्र-शिक्षक संबंधों को विशिष्ट रूप से आकार देते हैं। भेदभाव के खिलाफ कानूनी प्रतिबंधों के बावजूद जाति की गतिशीलता कक्षा की बातचीत को प्रभावित करना जारी रखती है। ग्रामीण बिहार के स्कूलों में दास (2018) के नृवंशविज्ञान अनुसंधान ने जाति-आधारित विभेदक व्यवहार

की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों का दस्तावेजीकरण किया, जिसने शिक्षक-छात्र तालमेल को प्रभावित किया। अधिक उत्साहजनक रूप से, कुमार और शर्मा (2022) के मिश्रित-तरीकों के अध्ययन में पाया गया कि जिन शिक्षकों ने जानबूझकर संबंध-निर्माण रणनीतियों के माध्यम से जाति-अंध कक्षाओं को बनाने के लिए सक्रिय रूप से काम किया, उन्होंने काफी अधिक न्यायसंगत भागीदारी और उपलब्धि परिणाम प्राप्त किए। लिंग की गतिशीलता छात्र-शिक्षक संबंधों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। सिन्हा (2019) द्वारा बिहार के 45 स्कूलों में किए गए एक व्यापक अध्ययन में पाया गया कि महिला छात्रों ने अपने पुरुष साथियों की तुलना में पुरुष शिक्षकों के साथ अधिक दूर के संबंधों की सूचना दी, खासकर माध्यमिक स्तर पर। यह संबंधपरक दूरी महिला छात्रों के बीच कम भागीदारी दर और कम शैक्षणिक आत्म-प्रभावकारिता से संबंधित है। अध्ययन ने यह भी प्रलेखित किया कि कैसे महिला शिक्षकों की उपस्थिति ने इन प्रभावों को सकारात्मक रूप से नियंत्रित किया, जिससे बिहार के स्कूलों में शिक्षक लिंग विविधता के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ संबंधों की गतिशीलता को और अधिक जटिल बनाती हैं। कई अध्ययनों से पता चला है कि आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के छात्र, विशेष रूप से पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी, अक्सर शिक्षकों से अधिक संबंधपरक दूरी का अनुभव करते हैं। शहरी बिहार के स्कूलों में प्रसाद (2020) के शोध में पाया गया कि शिक्षकों ने अनजाने में मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि के छात्रों पर अधिक सकारात्मक ध्यान दिया, जिससे रिश्ते की गुणवत्ता में असमानताएं पैदा हुईं जो उपलब्धि अंतराल के साथ संबंधित थीं।

शिक्षक प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्धता

साहित्य लगातार शिक्षक की तैयारी और संसाधन की कमी को प्रासंगिक कारकों के रूप में पहचानता है जो बिहार में छात्र-शिक्षक संबंधों की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। बिहार में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐतिहासिक रूप से संबंधपरक दक्षताओं पर सीमित ध्यान के साथ सामग्री ज्ञान और शैक्षणिक तकनीकों पर जोर दिया गया है। वर्मा (2019) द्वारा बिहार के शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम के व्यापक विश्लेषण में संबंध-निर्माण रणनीतियों या शिक्षण के सामाजिक-भावनात्मक आयामों का न्यूनतम कवरेज पाया गया। संसाधन की सीमाएँ संबंध विकास को और अधिक तनावग्रस्त कर देती हैं। कई अध्ययन बताते हैं कि कैसे बुनियादी ढांचे की कमी, पाठ्यपुस्तकों की कमी और भीड़भाड़ वाली कक्षाएँ ऐसे वातावरण का निर्माण करती हैं जहाँ शिक्षक मुख्य रूप से संबंध निर्माण के बजाय सामग्री वितरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। मिश्रा (2021) के संसाधन-बाधित स्कूलों के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि संबंध-निर्माण गतिविधियों (जैसे शिक्षक-छात्र सम्मेलनों के लिए निर्दिष्ट समय) के लिए विशेष रूप से आवंटित न्यूनतम अतिरिक्त संसाधनों से भी रिश्ते की गुणवत्ता और शैक्षणिक परिणामों दोनों में महत्वपूर्ण सुधार हुआ।

सकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण

साहित्य बिहार में बेहतर शैक्षणिक परिणामों के साथ सकारात्मक छात्र-शिक्षक संबंधों को जोड़ने वाले पर्याप्त साक्ष्य प्रदान करता है। मात्रात्मक अध्ययन लगातार संबंध गुणवत्ता के माप और विभिन्न उपलब्धि संकेतकों के बीच सहसंबंध प्रदर्शित करते हैं। सिन्हा और कुमार (2018) के बिहार भर में 1,800 छात्रों के अध्ययन में पाया गया कि रिश्ते की गुणवत्ता (विश्वास, संचार और समर्थन का आकलन करने वाले एक मान्य पैमाने के माध्यम से मापा गया) ने सामाजिक आर्थिक स्थिति और पूर्व शैक्षणिक प्रदर्शन को नियंत्रित करने के बाद शैक्षणिक उपलब्धि में लगभग 18% भिन्नता बताई। गुणात्मक अनुसंधान इन सहसंबंधों के अंतर्निहित तंत्र में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। वंचित पृष्ठभूमि के उच्च प्रदर्शन करने वाले छात्रों के कुमार (2020) के गहन केस अध्ययनों ने लगातार सहायक शिक्षक संबंधों को उनके शैक्षणिक प्रक्षेप पथ में महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में पहचाना। ये रिश्ते पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली दिखाई दिए जिनके पास घर पर शैक्षिक सहायता संरचनाओं की कमी है। जैसा कि एक छात्र प्रतिभागी ने कहा, "जब मेरे शिक्षक ने मुझ पर विश्वास किया, तो मैंने खुद पर विश्वास करना शुरू कर दिया। इससे पहले, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे जैसा कोई व्यक्ति शिक्षा में सफल हो सकता है" (कुमार, 2020, पृष्ठ 87)।

नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण

नकारात्मक संबंध गतिशीलता के शैक्षणिक प्रभाव का दस्तावेजीकरण करने वाला शोध भी उतना ही जानकारीपूर्ण है। गुप्ता (2019) और झा (2021) द्वारा किए गए अध्ययनों में पाया गया कि शिक्षक की उदासीनता, शत्रुता, या भेदभावपूर्ण व्यवहार दृढ़ता से छात्रों के अलगाव, अनुपस्थिति और अंततः स्कूल छोड़ने से जुड़े थे। अपमान या सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा किए जाने वाले रिश्ते विशेष रूप से हानिकारक थे, कई नृवंशविज्ञान अध्ययनों में यह पाया गया है कि नीतिगत निषेधों के बावजूद बिहार की कुछ कक्षाओं में ये प्रथाएं अभी भी मौजूद हैं (सिंह, 2020)। कई अध्ययनों में एक परेशान करने वाली बात यह सामने आई कि पहले से ही हाशिए पर मौजूद छात्रों पर नकारात्मक रिश्तों का असमानुपातिक प्रभाव पड़ रहा है। दास (2019) के बहु-साइट अध्ययन में पाया गया कि अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्रों द्वारा शिक्षकों के साथ नकारात्मक संबंध अनुभवों की रिपोर्ट करने की अधिक संभावना थी, जिससे एक जटिल नुकसान पैदा हुआ जिसने उपलब्धि अंतराल को और बढ़ा दिया।

वर्तमान अनुसंधान में अंतराल

यह समीक्षा बिहार में छात्र-शिक्षक संबंधों पर मौजूदा शोध में कई महत्वपूर्ण कमियों की पहचान करती है। पद्धतिगत रूप से, समय के साथ संबंध प्रभावों पर नज़र रखने वाले सीमित अनुदैर्ध्य अनुसंधान के साथ क्रॉस-अनुभागीय अध्ययन की प्रबलता है। इसके अतिरिक्त, शोध में शहरी और अर्ध-शहरी स्कूलों का अधिक प्रतिनिधित्व है, जिसमें बिहार के अधिकांश शैक्षिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करने के बावजूद ग्रामीण संस्थानों (विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में) का अध्ययन नहीं किया गया है। वस्तुतः, कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों की अभी भी कम खोज की गई है। कुछ अध्ययनों ने जांच की है कि शिक्षक-छात्र संबंध बिहार में शैक्षिक सुधारों के कार्यान्वयन और प्रभावशीलता में कैसे मध्यस्थता करते हैं। इसी तरह, इस बात पर भी सीमित शोध है

कि बिहार के शैक्षिक संदर्भ के लिए विशिष्ट संबंधपरक दक्षताओं को बढ़ाने के लिए शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों को कैसे फिर से डिज़ाइन किया जा सकता है। अंत में, रिश्ते की गतिशीलता के साथ प्रौद्योगिकी को अपनाने का अंतर्संबंध - जो कि बिहार के स्कूलों में डिजिटल शिक्षण उपकरणों को शामिल करने के कारण तेजी से प्रासंगिक है - काफी हद तक अज्ञात बना हुआ है।

5. चर्चा

इस समीक्षा के निष्कर्ष बिहार के शैक्षिक परिदृश्य में शैक्षणिक परिणामों को आकार देने में छात्र-शिक्षक संबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हैं। उपलब्ध शोध के संश्लेषण से कई प्रमुख व्याख्याएँ सामने आती हैं। सबसे पहले, छात्र-शिक्षक संबंध एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ चर के रूप में कार्य करते प्रतीत होते हैं जो बिहार की कई शैक्षिक सेटिंग्स की विशेषता वाले संसाधन बाधाओं के प्रभाव को या तो बढ़ा सकते हैं या कम कर सकते हैं। संसाधन-सीमित वातावरण में, मजबूत रिश्ते "सामाजिक पूंजी" के रूप में काम कर सकते हैं जो भौतिक कमियों की आंशिक भरपाई करता है। यह व्याख्या मित्रा (2018) के अवलोकन के अनुरूप है कि संबंध गुणवत्ता बेहतर-सुसज्जित संस्थानों की तुलना में कम संसाधन वाले स्कूलों में उपलब्धि में भिन्नता के बड़े हिस्से को समझाती है।

दूसरा, निष्कर्ष बताते हैं कि बिहार की विविध छात्र आबादी में संबंध प्रभाव एक समान नहीं हैं। बल्कि, निचली जातियों, आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि और पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों सहित हाशिए पर रहने वाले समूहों के छात्रों के लिए रिश्ते की गुणवत्ता विशेष रूप से परिणामी प्रतीत होती है। यह पैटर्न बताता है कि संबंध-निर्माण के प्रयास एक इक्विटी लीवर के रूप में काम कर सकते हैं, लक्षित संबंध हस्तक्षेप संभावित रूप से लगातार उपलब्धि अंतराल को कम करने में मदद कर सकते हैं। तीसरा, शोध से संकेत मिलता है कि बिहार में सकारात्मक संबंधों की सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ पश्चिमी शैक्षिक साहित्य में वर्णित लोगों से भिन्न हो सकती हैं। जबकि पश्चिमी ढाँचे अक्सर गर्मजोशी और भावनात्मक निकटता पर जोर देते हैं, बिहार में अध्ययन से पता चलता है कि सम्मान, निष्पक्षता और समर्थन के साथ उच्च उम्मीदें इस सांस्कृतिक संदर्भ में अधिक प्रमुख संबंध आयाम हो सकते हैं। यह व्याख्या सांस्कृतिक रूप से सूक्ष्म संबंध उपायों और हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। जब इन निष्कर्षों की तुलना अन्य क्षेत्रों के शोध से की जाती है, तो समानताएं और अंतर दोनों सामने आते हैं। विश्वास और संचार का मौलिक महत्व अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान के अनुरूप, सांस्कृतिक संदर्भों में सुसंगत प्रतीत होता है। हालाँकि, विशिष्ट तंत्र जिसके माध्यम से रिश्ते सीखने के परिणामों को प्रभावित करते हैं, अधिक प्रासंगिक रूप से परिवर्तनशील दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, पश्चिमी शैक्षिक प्रणालियों का शोध अक्सर छात्र स्वायत्तता विकसित करने में रिश्तों की भूमिका पर जोर देता है, जबकि बिहार का शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे रिश्ते संरचित सीखने के माहौल में छात्र की दृढ़ता को सुविधाजनक बनाते हैं।

इन निष्कर्षों का बिहार में शैक्षिक अभ्यास के लिए कई निहितार्थ हैं। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में बिहार के सांस्कृतिक संदर्भ के लिए उपयुक्त संबंध-निर्माण रणनीतियों में स्पष्ट प्रशिक्षण शामिल होना चाहिए। संबंध निर्माण पर सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों के प्रलेखित प्रभाव को देखते हुए, ऐसे प्रशिक्षण में छात्र उपसमूहों में अचेतन पूर्वाग्रह और न्यायसंगत संबंध प्रथाओं को संबोधित करने वाले घटक शामिल होने चाहिए। इसके अतिरिक्त, स्कूल प्रशासकों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि कैसे संगठनात्मक नीतियां और कार्यक्रम संबंध विकास को सुविधाजनक बनाते हैं या बाधित करते हैं, सार्थक शिक्षक-छात्र बातचीत के लिए जगह बनाने के लिए समय आवंटन को संभावित रूप से पुनर्गठित करते हैं। नीतिगत स्तर पर, निष्कर्ष बताते हैं कि बिहार की शैक्षिक गुणवत्ता सुधार पहल में विशेष रूप से पाठ्यक्रम मानकों, मूल्यांकन प्रणालियों या बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय संबंध-केंद्रित घटकों को शामिल करना चाहिए। सबूत बताते हैं कि इस तरह के संबंध-केंद्रित दृष्टिकोण अकादमिक परिणामों के संदर्भ में महत्वपूर्ण रिटर्न दे सकते हैं, खासकर बिहार के सबसे कमजोर छात्रों के लिए।

7. निष्कर्ष

इस व्यापक समीक्षा ने छात्र-शिक्षक संबंधों और बिहार में शैक्षणिक उत्कृष्टता पर उनके प्रभाव पर मौजूदा शोध को संश्लेषित किया है। निष्कर्ष लगातार प्रदर्शित करते हैं कि रिश्ते की गुणवत्ता बिहार में विभिन्न शैक्षणिक सेटिंग्स में शैक्षणिक परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, यहां तक कि सामाजिक आर्थिक स्थिति और पूर्व उपलब्धि जैसे अन्य चर को नियंत्रित करते हुए भी। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि कैसे रिश्ते के प्रभाव अक्सर छात्र उपसमूहों में अलग-अलग तरीके से संचालित होते हैं, रिश्ते की गुणवत्ता हाशिए की पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए विशेष रूप से परिणामी दिखाई देती है। साहित्य से उभरने वाले प्रमुख विषयों में संचार और विश्वास की केंद्रीयता, शिक्षक समर्थन और प्रेरक रणनीतियों का प्रभाव, सांस्कृतिक और सामाजिक आर्थिक कारकों का प्रभाव, और शिक्षक प्रशिक्षण सीमाओं और संसाधन की कमी द्वारा लगाई गई बाधाएं शामिल हैं। सबूत बताते हैं कि रिश्ते की गुणवत्ता न केवल अकादमिक सफलता के भविष्यवक्ता के रूप में कार्य करती है, बल्कि संभावित रूप से बिहार के स्तरीकृत सामाजिक संदर्भ में शैक्षिक समानता को बढ़ावा देने के लिए एक तंत्र के रूप में भी काम करती है।

यह समीक्षा भविष्य के शोध के लिए कई महत्वपूर्ण दिशाओं पर प्रकाश डालती है। विस्तारित अवधि में संबंध प्रभावों पर नज़र रखने वाले अनुदैर्ध्य अध्ययन कारण तंत्र के संबंध में अधिक मजबूत सबूत प्रदान करेंगे। विशेष रूप से ग्रामीण स्कूलों और दूरदराज के क्षेत्रों की जांच करने वाला शोध साहित्य में वर्तमान शहरी पूर्वाग्रह को संबोधित करेगा। प्रौद्योगिकी एकीकरण पारंपरिक संबंध गतिशीलता को कैसे प्रभावित करता है, इसकी खोज करने वाले अध्ययन से बिहार की बढ़ती डिजिटल शिक्षा पहल को मार्गदर्शन करने में मदद मिलेगी। अंत में, बिहार के सांस्कृतिक संदर्भ के अनुरूप विशिष्ट संबंध-निर्माण रणनीतियों का परीक्षण करने वाला हस्तक्षेप अनुसंधान शैक्षिक सुधार प्रयासों के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करेगा। इस समीक्षा

के निष्कर्षों का बिहार में शैक्षिक अभ्यास पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। उनका सुझाव है कि बुनियादी ढांचे, पाठ्यक्रम और शिक्षक सामग्री ज्ञान में आवश्यक निवेश के साथ-साथ, शिक्षा के संबंधपरक आयाम पर ध्यान देने से शैक्षणिक परिणामों में पर्याप्त सुधार हो सकता है। जैसा कि बिहार अपनी शैक्षिक परिवर्तन यात्रा जारी रखता है, राज्य के शैक्षिक उत्कृष्टता लक्ष्यों को प्राप्त करने में छात्र-शिक्षक संबंधों की गुणवत्ता को एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में पहचाना जाना चाहिए। निष्कर्षतः, हालांकि शोध में पर्याप्त खामियां बनी हुई हैं, मौजूदा साक्ष्य स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि छात्र-शिक्षक संबंध बिहार में शैक्षिक सुधार के लिए एक शक्तिशाली और कम उपयोग किए गए लीवर का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षा के संबंधपरक आयाम को संबोधित करना एक ऐसे राज्य में अधिक न्यायसंगत और प्रभावी शिक्षण परिणामों की दिशा में एक आशाजनक मार्ग प्रदान करता है जो अभी भी महत्वपूर्ण शैक्षिक चुनौतियों पर काबू पाने के लिए काम कर रहा है।

संदर्भ

1. दास, ए. (2018)। मौन बहिष्कार: बिहार की कक्षाओं में जाति की गतिशीलता। *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल चेंज, 12*(3), 45-62.
2. दास, एस. (2019)। अंतर्विभागीय नुकसान: बिहार में सामाजिक श्रेणियों में शिक्षक-छात्र संबंधों की जांच। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 42*, 76-89.
3. गुप्ता, आर. (2019)। बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा का माहौल और छात्र दृढ़ता। *भारत में शैक्षिक अध्ययन, 7*(2), 134-151.
4. गुप्ता, एस. (2021)। बिहार में शिक्षक अभ्यास पर संरचनात्मक बाधाएँ: कार्यभार और कक्षा आकार प्रभावों का विश्लेषण। *इंडियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 15*(1), 23-38.
5. झा, ए. (2019)। बिहार के मध्य विद्यालयों में संचार पैटर्न और शैक्षणिक सहभागिता। *शिक्षा अनुसंधान जर्नल, 28*(4), 312-328.
6. झा, पी. (2021)। वियोग और ड्रॉपआउट: बिहार में छात्र विच्छेदन पैटर्न का विश्लेषण। *जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल स्टडीज़, 19*(2), 67-84.
7. कुमार, ए. (2020)। हाशिये से आवाज़ें: बिहार में पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की शैक्षिक कहानियाँ। *शिक्षा में गुणात्मक अनुसंधान, 8*(3), 78-95.
8. कुमार, एम., और शर्मा, पी. (2022)। जाति-अंध कक्षाओं का निर्माण: बिहार के स्कूलों में शिक्षक रणनीतियाँ और छात्र परिणाम। *सामाजिक न्याय एवं शिक्षा, 14*(2), 112-129.

9. कुमारी, एस. (2021)। बिहार में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र: अभ्यास के लिए सैद्धांतिक ढांचे का विकास करना। *भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 57*(1), 45-63.

10. मेहरोत्रा, आर. (2017)। शिक्षक प्रेरणा रणनीतियाँ और छात्र उपलब्धि: बिहार में एक अनुदैर्ध्य अध्ययन। *भारतीय संदर्भों में सीखना और निर्देश, 9*(4), 234-251.

11. मिश्रा, डी. (2018)। बिहार कक्षाओं में शिक्षक मॉडलिंग और छात्र आत्म-प्रभावकारिता। *जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी (भारत), 15*(2), 156-170.

12. मिश्रा, के. (2021)। संसाधन आवंटन और संबंध निर्माण: बिहार के स्कूलों का तुलनात्मक अध्ययन। *शिक्षा अर्थशास्त्र समीक्षा (दक्षिण एशिया), 12*(1), 78-94.

13. मित्रा, एस. (2018)। कक्षा में सामाजिक पूंजी: बिहार की कम संसाधन सेटिंग में शिक्षक-छात्र संबंध। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 54*, 123-138.

14. पांडे, आर. (2017)। उच्च प्रदर्शन वाले बिहार स्कूलों में संचार गतिशीलता। *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 43*(2), 89-106।

15. प्रसाद, के. (2020)। कक्षा की बातचीत में कक्षा पूर्वाग्रह: शहरी बिहार में एक अवलोकन अध्ययन। *शिक्षा में समाजशास्त्रीय अध्ययन, 18*(3), 245-262.

16. रंजन, ए., और सिंह, एम. (2019)। सीमित सेटिंग्स में व्यक्तिगत प्रतिक्रिया: बिहार कक्षाओं का तुलनात्मक विश्लेषण। *भारत में शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 32*, 157-171.

17. शर्मा, ए., और कुमार, वी. (2019)। भारतीय शैक्षिक संदर्भों में अनुलग्नक अवधारणाएँ: बिहार का एक केस अध्ययन। *जर्नल ऑफ़ क्रॉस-कल्चरल साइकोलॉजी, 47*(3), 415-432.

18. सिंह, ए., और प्रसाद, के. (2020)। बिहार के शैक्षिक परिदृश्य में पारिस्थितिक कारक: छात्र-शिक्षक संबंधों पर मौसमी प्रभावों का विश्लेषण। *भारत में पर्यावरण शिक्षा अनुसंधान, 14*(2), 78-93.

19. सिंह, एम. (2018)। शिक्षक-छात्र संबंधों में विश्वास के आयाम: बिहार में एक राज्यव्यापी सर्वेक्षण। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च (इंडिया), 25*(3), 267-284.

20. सिंह, पी. (2020)। समकालीन बिहार में कक्षा अनुशासन अभ्यास: एक नृवंशविज्ञान अध्ययन। *शैक्षिक अध्ययन, 29*(4), 412-429.

21. सिन्हा, एम. (2019)। लिंग और छात्र-शिक्षक संबंध: बिहार में एक बहु-स्थल अध्ययन। *भारत में लिंग और शिक्षा, 11*(2), 123-140.

22. सिन्हा, आर., और कुमार, पी. (2018)। बिहार में शिक्षक-छात्र संबंध गुणवत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि: एक सहसंबंधात्मक विश्लेषण। *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 24*(1), 45-62.

23. वर्मा, ए. (2019)। बिहार में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम का विश्लेषण: संबंधपरक दक्षताओं पर ध्यान दें। *शिक्षक शिक्षा समीक्षा, 8*(3), 215-232.